एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 06, अंक: 04 (जुलाई-अगस्त, 2026)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

धनिया की उन्नत किस्म (जवाहर धनिया-10) से बढ़ी किसान की आय

*डॉ. द्वारका[1], निशा चढ़ार[2], शोभाराम ठाकुर[3] एवं डॉ. उषा[4]

[1]अतिथि शिक्षक, कीटशास्त्र विभाग, जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, कृषि महाविद्यालय, पन्ना, मध्य प्रदेश- 488001, भारत

[2]एम.एससी. (बॉटनी), महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, शासकीय स्नातकोत्तर उत्कृष्ट महाविद्यालय, टीकमगढ़, मध्य प्रदेश- 472001, भारत

[3]वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी, एक्रिप परियोजना तिल फसल, कृषि महाविद्यालय, टीकमगढ़, मध्य प्रदेश- 472001, भारत

[4]गेस्ट फैकल्टी, हॉर्टिकल्चर (सब्जी विज्ञान), उद्यानिकी महाविद्यालय, रहली, सागर, जे.एन.के.वि.वि., जबलपुर (म.प्र.), भारत

*संवादी लेखक का ईमेल पता: dwarkaprasadjnkvv@gmail.com

दमोह जिले के एक साधारण किन्तु दूरदर्शी किसान श्री सीमांत पटेल ने यह सिद्ध कर दिया कि यदि खेती वैज्ञानिक पद्धति से की जाए तो कम भूमि में भी अधिक लाभ कमाया जा सकता है। वर्षों से पारंपरिक खेती कर रहे श्री पटेल को धनिया की फसल से अपेक्षित उत्पादन और लाभ नहीं मिल पा रहा था। लागत बढ़ती जा रही थी, जबकि मुनाफा सीमित था। ऐसे समय में उन्होंने जोखिम उठाते हुए उन्नत किस्म जवाहर धनिया–10 को अपनाने का निर्णय लिया।

कृषि विज्ञान केंद्र से मिला मार्गदर्शन

श्री पटेल ने कृषि विज्ञान केंद्र, दमोह के विशेषज्ञों से संपर्क किया। वैज्ञानिकों ने उन्हें बताया कि जवाहर धनिया–10 एक उन्नत एवं उच्च उत्पादन क्षमता वाली किस्म है, जो बेहतर वनस्पति विकास और अधिक शाखाओं के लिए जानी जाती है। इस किस्म की ऊँचाई लगभग 100–106 सेमी तक होती है तथा प्रति हेक्टेयर 18–20 क्विंटल तक उपज देने की क्षमता रखती है। इसके साथ ही यह किस्म स्थानीय जलवायु के अनुकूल भी है।

विशेषज्ञों के मार्गदर्शन में उन्होंने खेत की गहरी जुताई कर मिट्टी को भुरभुरी बनाया। मिट्टी परीक्षण के आधार पर संतुलित उर्वरकों का प्रयोग किया गया। समय पर बुवाई (रबी मौसम में), बीज उपचार तथा उचित दूरी पर कतारों में बोनी की गई।

फसल प्रबंधन में अपनाई वैज्ञानिक तकनीक

श्री पटेल ने फसल प्रबंधन में निम्न प्रमुख बिंदुओं पर विशेष ध्यान दिया–

- **उचित बीज दर एवं बीज उपचार–** रोगों से बचाव के लिए बीज को उपचारित किया गया।
- **संतुलित पोषण प्रबंधन–** नाइट्रोजन, फास्फोरस एवं पोटाश का संतुलित उपयोग किया गया।
- **सिंचाई प्रबंधन–** फसल की महत्वपूर्ण अवस्थाओं (अंकुरण, शाखा विकास, पुष्प अवस्था) पर हल्की सिंचाई दी गई।
- **खरपतवार नियंत्रण–** प्रारंभिक अवस्था में निराई–गुड़ाई कर खरपतवार पर नियंत्रण रखा गया।
- **कीट एवं रोग नियंत्रण–** जैविक एवं आवश्यकता अनुसार रासायनिक उपाय अपनाए गए।

इन वैज्ञानिक उपायों का परिणाम यह हुआ कि पौधों में अधिक शाखाएँ निकलीं, दाने भरपूर बने और फसल स्वस्थ रही।

↓

उत्पादन और आय में उल्लेखनीय वृद्धि

जहाँ पहले पारंपरिक किस्म से उन्हें औसतन 10–12 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उत्पादन मिलता था, वहीं जवाहर धनिया–10 से लगभग 18–19 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उपज प्राप्त हुई। बेहतर गुणवत्ता और दानों की आकर्षक चमक के कारण बाजार में उन्हें अच्छा मूल्य भी मिला। इससे उनकी आय में लगभग 30–40 प्रतिशत तक वृद्धि हुई।

श्री पटेल बताते हैं कि "सही जानकारी और तकनीक अपनाकर खेती को लाभ का सौदा बनाया जा सकता है। अब मैं हर फसल में नई उन्नत किस्मों और वैज्ञानिक सलाह को प्राथमिकता देता हूँ।"

बने क्षेत्र के प्रेरणास्रोत

आज सीमांत पटेल की सफलता से आसपास के कई किसान प्रेरित होकर श्रक–10 किस्म को अपना रहे हैं। कृषि विभाग भी उन्हें प्रगतिशील किसान के रूप में उदाहरण के तौर पर प्रस्तुत करता है। वे समय–समय पर किसान गोष्ठियों में अपने अनुभव साझा करते हैं और बताते हैं कि आधुनिक कृषि पद्धतियाँ ही भविष्य की खेती की कुंजी हैं।

श्री सीमांत पटेल की यह सफलता कहानी यह संदेश देती है कि यदि किसान नई तकनीक, उन्नत किस्म और वैज्ञानिक मार्गदर्शन को अपनाएँ, तो खेती न केवल आत्मनिर्भर बना सकती है बल्कि सम्मानजनक आय का माध्यम भी बन सकती है।

उनकी मेहनत, लगन और नवाचार की सोच ने यह साबित कर दिया कि "परिवर्तन ही प्रगति का मार्ग है।"